Result Mitra Daily Magazine

गुजरात में चांदीपुरा वायरस का हालिया संक्रमण एवं इंसेफेलाइटिस बीमारी

हालिया संदर्भ :-

- हाल ही में 15 जुलाई को गुजरात सरकार ने संदिग्ध चांदीपुरा वायरस (CHPV) के संक्रमण से छः बच्चों की मौत की पुष्टि की है।

- गुजरात सरकार के अनुसार राज्य में 10 जुलाई से 15 जुलाई के बीच अब तक कुल 12 संदिग्ध मामले सामने आए है।
- गुजरात स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार अब तक ज्ञात कुल 12 चांदीपुरा वायरस संक्रमण मामलों में से 4 मरीज साबरकांठा जिले से, 3 मरीज अरावली से और एक-एक मरीज महिसागर और खेडा से संबंधित है।
- इसके अलावा दो मरीज राजस्थान और एक मरीज मध्यप्रदेश के है।

चांदीपुरा वायरस (CHPV) क्या है ?

- चांदीपुरा वायरस "रबडोविरिडे" परिवार का एक वैसिकुलो वायरस है।

- वर्ष 1965 में पहली बार इसकी पहचान महाराष्ट्र के चांदीपुरा गाँव में “इंसेफेलाइटिस” प्रकोप के दौरान हुई थी जिसके कारण इस वायरस का नाम चांदीपुरा वायरस रखा गया।
- चांदीपुरा वेसिकुलो वायरस में “रेबीज” का कारण बनने वाला “लाइसा वायरस” जैसे अन्य सदस्य भी इसमें शामिल रहते है।
- इस वायरस के वाहक के रूप में सैंडफ्लाइज (Sandflies) की कई प्रजातियों जैसे फ्लेबोटोमाइन सैंडफ्लाइज और फ्लेबोटोमस पापाटासी तथा कुछ मच्छर की प्रजातियाँ एडिज एजेप्टी (डेंगु का वाहक) काम करता है।
- यह चांदीपुरा वायरस उपरोक्त वाहक कीडों के लार ग्रंथि में रहता है।
- जब से चांदीपुरा वायरस के वाहक कीडे मनुष्यों या अन्य घरेलू जानवरों को काटते हैं तो इन वाहक के लार ग्रंथि में रहने वाले चांदीपुरा वायरस इनके शरीर में खून के द्वारा फैल जाते है।
- इस चांदीपुरा वायरस के कारण होने वाला संक्रमण मनुष्यों के केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र तक पहुँचकर “इंसेफेलाइटिस” बीमारी का कारण बनता है।
- “इंसेफेलाइटिस” मनुष्यों के मस्तिष्क संबंधी एक बीमारी है जो मस्तिष्क के सक्रिय उतकों (tissues) के सूजन के लिए जिम्मेदार होता है।

चांदीपुरा वायरस के संक्रमण के लक्षण

- शुरूआत में आमतौर पर CHPV यानी चांदीपुरा वायरस के संक्रमण के लक्षण सामान्य फ्लू (Flu) के तरह ही होते है।

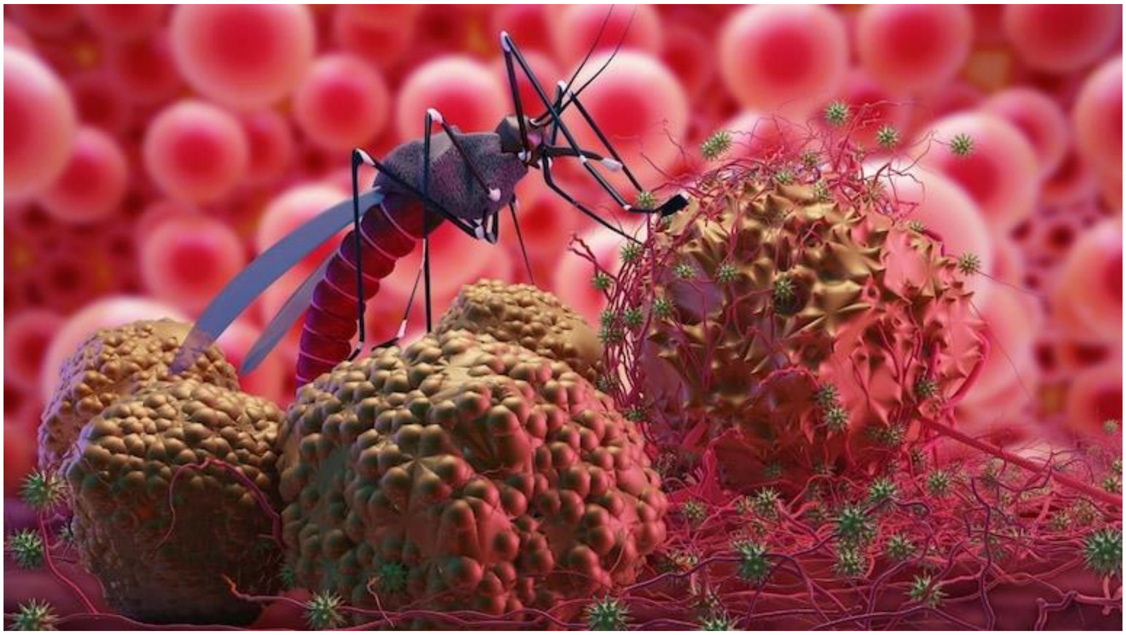

- शुरूआती लक्षणों में तीव्र बुखार, शरीर में दर्द और सिरदर्द होता है।
- तत्पश्चात यह फ्लू सेंसोरियम (दौरे) और “इंसेफेलाइटिस” में परिवर्तित हो जाता है।
- हालांकि CHPV वायरस के अन्य लक्षणों में श्वसन संबंधी समस्या, रक्तस्त्राव की प्रवृत्ति या एनीमिया भी शामिल है।

- CHPV संबंधी अध्ययन के अनुसार वायरस का "इंसेफेलाइटिस" स्तर तक संक्रमण बढने के बाद यह संक्रमण अक्सर बहुत तेजी से बढता है जो संक्रमित मनुष्यों का 24 से 28 घंटे के अंदर मृत्यु का कारण बन जाता है।
- हालांकि CHPV संबंधी अध्ययन में यह पाया गया है कि इस वायरस से संक्रमित होने वाले मनुष्यों में 15 वर्षों से कम उम्र तक के बच्चों तक ही सीमित हैं।

उपचारः-

- वर्तमान में चांदीपुरा वायरस संक्रमण का अब तक कोई एंटीरेट्रोवायरल थेरेपी या टीका उपलब्ध नहीं है।
- अब तक चांदीपुरा वायरस संक्रमण को लक्षण के आधार पर ही उपचार किया जाता रहा है।
- चांदीपुरा वायरस के संक्रमण "इंसेफेलाइटिस" संक्रमण से मृत्यु दर को कम करने के लिए मस्तिष्कों के उतकों में होने वाले सूजन का इलाज बहुत आवश्यक हो जाता है।

भारत में चांदीपुरा वायरस संक्रमण से प्रभावित क्षेत्र

- चंदीपुरा वायरस यानि CHPV संक्रमण को वर्ष 1965 में महाराष्ट्र में डेंगु, चिकनगुनिया के प्रकोप के दौरान अलग किया गया था।

- भारत में चांदीपुरा वायरस का सबसे महत्वपूर्ण प्रकोप वर्ष 2003-04 में या जब महाराष्ट्र, गुजरात तथा आंध्रप्रदेश के कई क्षेत्र इस संक्रमण से प्रभावित थे।
- 2003-04 के इस प्रकोप के दौरान महाराष्ट्र के 329 बच्चे चांदीपुरा वायरस से संक्रमित हुए जिनमें से 189 बच्चे की मृत्यु हो गई।
- इस अवधि में चांदीपुरा वायरस संक्रमण में वर्ष 2003 में सबसे अधिक मृत्यु दर आंध्रप्रदेश की लगभग 55 प्रतिशत थी, जबकि वर्ष 2004 में सबसे अधिक मृत्यु दर गुजरात की 78 प्रतिशत आँकी गई।

- इसके अलावा वर्ष 2009, 2010, 2011, 2014, 2016 और 2019 में भी महाराष्ट्र, गुजरात और आंध्रप्रदेश के कुछ क्षेत्रों में चांदीपुरा वायरस का संक्रमण देखा गया।
- विशेषज्ञों के अनुसर CHPV संक्रमण काफी हद तक भारत के मध्य भाग गुजरात, महाराष्ट्र एवं आंध्रप्रदेश में स्थानिक बना हुआ है, क्योंकि यहाँ CHPV संक्रमण के लिए जिम्मेदार वाहक सैंडफ्लाइज और मच्छरों की आबादी काफी अधिक है।

इंसेफेलाइटिस (Encephalitis)

- इंसेफेलाइटिस एक मानव मस्तिष्क से संबंधित बीमारी है, जो मस्तिष्क के उत्तकों (tissues) में सूजन के लिए जिम्मेदार होता है।
- इंसेफेलाइटिस संक्रमण के लिए जिम्मेदार कारकों में हर्पीज सिम्पलेक्स वायरस, रेबीज वायरस, बैक्टीरिया या परजीवी का संक्रमण शामिल है।

प्रभावित वर्ग

- इंसेफेलाइटिस संक्रमण का सबसे अधिक प्रभाव कमजोर प्रतिरक्षा वाले बच्चे और वृद्ध में अधिक देखा जाता है।

प्रकार

- इंसेफेलाइटिस बीमारी को मुख्य तौर पर दो भागों में विभाजित किया जाता है।
- **संक्रमक इंसेफेलाइटिस**
- इंसेफेलाइटिस का यह रूप आमतौर पर हर्पीज सिम्पलेक्स वायरस, रेबीज वायरस, बैक्टीरिया कवक और परजीवी आदि के सम्पर्क में आने से फैलता है।
- **ऑटोइम्यून इंसेफेलाइटिस**

Result Mitra

- इंसेफेलाइटिस का यह रूप मुख्य रूप से मानव मस्तिष्क में अनियमित “प्रोटीन” के कारण होता हैं, जो मस्तिष्क के उत्तकों में सूजन पैदा करता है।
- संक्रामक इंसेफेलाइटिस की तुलना में ऑटोइम्यून इंसेफेलाइटिस का विकास मानव मस्तिष्क में धीरे-धीरे होता है।

लक्षण :-

- थकान या उर्जाविहीन महसूस होना
- तेज बुखार
- गंभीर सिरदर्द
- प्रकाश और ध्वनि के प्रति संवेदनशीलता
- गर्दन की अकडन
- अनिद्रा
- मिर्गी या दौरा पडना
- बेहोशी

उपचार :-

- इंसेफेलाइटिस के उपचार के लिए मुख्य तौर पर एंटीवायरल दवाएं जैसे स्टेरॉयड, एसाइक्लोविर, फास्फोरनेट, गैन्सीक्लोविर का प्रयोग किया जाता है।

TM
Result Mitra